PAGE NO.:
DATE: / /

* TOPIC :- सुचना :-

सुचना एक प्रकार का (आकड़ा या) तथ्य है, जो किसी भी माध्यम अर्थात पुस्तक, सामाचार-पत्र, किसी व्यक्ति, अथवा मिडिया आदि द्वारा भी प्राप्त होती है।

(margin: 27-7-20)

सुचना का संबंध प्रायः (स्मृत) से जुड़ा होता है तथा यह ज्ञान के प्रदान के लिए आधार प्रदान करती है अतः सुचना का संबंध प्रायः पूर्व ज्ञान से संबंधित होता है

उदाहरण → यह उदाहरणार्थ उदाहरण के लिए कहा जाएं कि किसी विद्यालय में चार सौ विद्यार्थी है तो यह सुचना है परन्तु इस सुचना को ज्ञान में परिवर्तित करना है, तो इन सभी विद्यार्थियों के बारें में विस्तृत जानकारी अर्थात उनकी आयु, बुद्धि लब्धि, परिवेश, आर्थिक स्थिति आदि सभी को जान लेने के बाद ही यह कहा जा सकता है कि इस विद्यालय के 400 ~~विद्यार्थि~~ विद्यार्थियों का हमें ज्ञान है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

DATE: / /

* ज्ञान और सूचना में समानता :-

प्राय: भारतीय समाज ज्ञान व सूचना के बिच भेद नही करता । समाज में दो प्रकार के बुद्धि जीवि होते है लोक बुद्धि जीवि, नीति बुद्धि जीवि दोनो का कार्य-क्षेत्र एक ही है, लेकिन लोक नीति अन्तर यह है कि लोक बुद्धि जीवि किसी तथ्य को गहराई से समझने का चेष्टा करते है जबकि नीति बुद्धि जीवि अपने ज्ञान को केवल लिखित और ~~सैद्धान~~ सैद्धान्तिक रूप-रेखा तैयार करते है

यही कारण है कि आज भारत ज्ञान का उपभोगता मात्र बन कर रह गया है।

यदि हम ~~सूची~~ सूचना से ज्ञान व संबंधित विभिन्न परीभाषाओं का विश्लेषण करे कि दोनो प्रत्ययो में संबंध है।

उदाहरण → उदाहरण के लिए सूचना व ज्ञान का उद्भव का ज्ञान ~~का~~ मूल

आकड़ो से होता है

(शिक्षा शास्त्री मिटेकी) ने दोनो प्रत्ययों की व्याख्या निम्न वाक्यों द्वारा की है " जिससे पता चलता है कि ज्ञान व सुचना एक ही है परन्तु ज्ञान सुचना का अधिक विकसीत रूप है। यह तथ्य कि ज्ञान व सुचना दोनो की पहचान अवलोकण में ही होती है इसके द्वारा भी ज्ञान व सुचना को समान माना जा सकता है " |

इससे यह स्पष्ट है कि आकड़ो के निरन्तर संबंधो में सुचना मानव मस्तिष्क का एक भाग बन जाती है जिसे प्रायोगिक रूप में वर्णित किया जा सकता है और दार्शनिक रूप में व्याख्या किया जा सकता है। सुचना ज्ञान प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती है

29-7-20

PAGE NO.:
DATE: / /

* TOPIC: – विश्वास कि अवधारणा।
(consept of

विश्वास को परिभाषित करने के लिए हम कह सकते हैं कि विश्वास आश्वासन अथवा दृढ़ धारणा की मानसिक स्थिति है यह अपने आन्तरिक अनुभूतियों की प्रति मन की वह मनोवृति है जिसमें वह अपने द्वारा निर्दिष्ट वास्तविक्ता को यथार्थ महत्त्व के रूप में समर्पित करता है विश्वास में वास्तविकता के प्रति आज्ञाकारीता का भाव पाया जाता है।

आस्था एवं विश्वास में एक अध्यात्मिक और अति तार्किक सत्ता के प्रति विश्वास पाया जाता है मनुष्य विश्वास में अवश्यक्ता अनुसार परिवर्तन करने में संकोच नहीं करता परन्तु आस्था को नहीं त्यागता है।

* सत्य की अवधारणा।

consept of treth → सत्य एक भाव है जो पवित्रता और

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

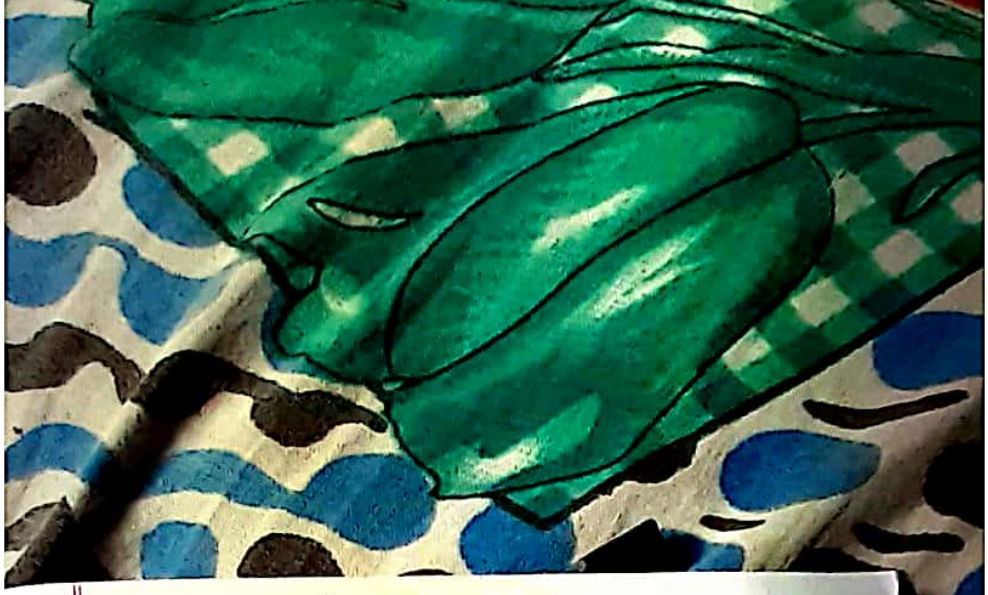

PAGE NO. :
DATE : / /

निश्चयधलता का ~~प्रतीक~~ प्रतीक है।

जैन धर्म में सत्य की परिभाषा

→ निर्वध प्रवृत्ति, घृणा, लोभ, निंदा करना, चुगली करना, अहंकार, क्रोध, चोरी आदि अपवित्र भाव हैं। इसी प्रकार सत्य भाषा का अर्थ है, वाणी का संयम और भाषा का विवेक।

सत्य के मापदण्ड की व्याख्या तीन सिद्धांतो द्वारा कही गयी की गयी है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner